"माँगन"

- कबीर ऐसा कउ नही इह तन देवे फूक । अंधा लोग न जानई रहिओ कबीरा कूकि । (1368)

अर्थ:- हे कबीर ! माया के प्रभाव के कारण कोई विरला ही ऐसा मिलता है जो प्रभु की महिमा करे, और शारीरिक मोह को जला दे । जगत मोह में इतना ग़र्क है कि इसको अपनी भलाई सूझती ही नहीं, भले ही कबीर ऊँचा - ऊँचा कूक के बता रहा है ।

- मांगउ राम ते इक दान । सगल मनोरथ पूरन होवहि सिमरउ तुमरा नाम ।

अर्थः- हे भाई ! मैं परमात्मा से एक ख़ैर माँगता हूँ परमात्मा के आगे मैं विनती करता हूँ हे प्रभु ! मैं तेरा नाम सदा स्मरण करता रहूँ, तेरे नाम जपने की इनायत से सारी मुरादें पूरी हो जाती हैं ।

चरन तुम्हारे हिरदै वसहि संतन का संग पावउ । सोग अगनि महि मन न विआपै आठ पहर गुण गावउ ।

अर्थः- हे प्रभु ! तेरे चरण मेरे हृदय में बसते रहें, मैं तेरे संत जनों की संगति हासिल कर लूँ, मैं आठों पहर तेरे गुण गाता रहूँ । तेरी महिमा की इनायत से मन चिन्ता की आग में नहीं फंसता ।

स्वसति विवसथा हरि की सेवा मध्यंत प्रभ जापण । नानक रंग लगा परमेसर बाहुड़ि जनम न छापण । (5-682)

अर्थः- हे नानक ! हमेशा प्रभु का नाम जपने से, हरि की सेवा भक्ति करने से मन में शाति की हालत बनी रहती है । जिस मनुष्य के मन में परमात्मा का प्यार बन जाए वह बार - बार जनम - मरन के चक्कर में नहीं आता ।

• सतिगुर भीखिआ देहि मैं तूं समरथ दातार । हउमै गरब निवारिऐ काम क्रोध अहंकार । लब लोभ परजालीऐ नाम मिलै आधार । अहिनिस नवतन निरमला मैला कबहूं न होई । नानक इह बिधि छुटीऐ नदरि तेरी सुख होई ।

अर्थः- हे गुरु ! तू बख्शीश करने योग्य है मुझे ख़ैर दे भिक्षा दे 'नाम' की मेरा अहम्, मेरा अहंकार, मेरा काम - क्रोध दूर हो जाए । हे गुरु ! तेरे दर पर मुझे प्रभु का नाम जिंदगी के लिए सहारा मिल जाए तो मेरा चस्का और लोभ अच्छी तरह जल जाए । प्रभु का नाम दिन - रात नए से

नया होता है भाव, ज्यों - ज्यों इसे जपते हैं, इससे प्यार बढ़ता जाता है 'नाम' पवित्र है, ये कभी मैला नहीं होता तभी तो हे नानक ! 'नाम' जपने से अहंकार के चक्कर से बच जाया जाता है । हे प्रभु ! ये सुख तेरी मेहर की नजर से मिलता है ।

दरि मंगत जाचै दान हरि दीजै कृपा करि । गुरमुखि लेहु मिलाई जन पावै नाम हरि । अनहद सबद वजाई जोती जोति धरि । हिरदै हरि गुण गाई जै जै सबद हरि । जग महि वरतै आपि हरि सेती प्रीति करि । (1-790)

अर्थः- हे प्रभु ! मैं भिखारी तेरे दरवाजे पर आकर ख़ैर माँगता हूँ, मेहर कर मुझे भिक्षा दे मुझे गुरु के सन्मुख करके अपने चरणों में जोड़ ले, मैं तेरा सेवक तेरा नाम प्राप्त कर लूँ तेरी ज्योति में अपनी आत्मा टिका के मैं तेरी महिमा का एक रस गीत गाऊँ, तेरी जै - जै कार की वाणी के गुण हृदय में गाऊँ, मैं तेरे से प्यार करूँ और इस तरह मुझे विश्वास हो जाए कि जगत में प्रभु खुद ही हर जगह मौजूद है ।

• तुध चित आए महा अनंदा जिस विसरहि सो मरि जाए । दइआल होवहि जिस ऊपर करते सो तुध सदा धिआए ।

अर्थः- हे प्रभु ! अगर तू चित में आ बसे, तो बड़ा सुख मिलता है । जिस मनुष्य को तू बिसर जाता है, वह मनुष्य आत्मिक मौत सहेड़ लेता है । हे करतार ! जिस मनुष्य पर तू दयावान होता है, वह सदा तुझे याद करता रहता है ।

मेरे साहिब तूं मैं माण निमाणी । अरदासि करी प्रभ अपने आगै सुण - सुण जीवां तेरी बाणी ।

अर्थः- हे मेरे मालिक प्रभु ! मुझ निमाणी का तू ही माण है । हे प्रभु ! मैं तेरे आगे आरजू करता हूँ, मेहर कर तेरी महिमा की वाणी सुन - सुन के मैं आत्मिक जीवन हासिल करता रहूँ ।

चरण धूड़ि तेरे जन की होवा तेरे दरसन कउ बल जाई ।
अमृित बचन रिदे उर धारी तउ किरपा ते संग पाई ।

अर्थः- हे प्रभु ! मैं तेरे दर्शनों से सदके जाता हूँ, मेहर कर मैं तेरे सेवक के चरणों की धूल बना रहूँ । तेरे सेवक के आत्मिक जीवन देने वाले वचन मैं अपने दिल में हृदय में बसाए रखूँ, तेरी कृपा से मैं तेरे सेवक की संगति प्राप्त करूँ ।

अंतर की गति तुध पहि सारी तुध जेवड अवर न कोई ।
जिसनो लाइ लैहि सो लागै भगत तुहारा सोई ।

अर्थः- हे भाई ! अपने दिल की हालत तेरे आगे खोल के रख दी है । मुझे तेरे बराबर का और कोई नहीं दिखता । जिस मनुष्य को तू अपने चरणों में जोड़ लेता है, वह तेरे चरणों में जुड़ा रहता है । वही तेरा असल भक्त है ।

दुई कर जोड़ मांगउ इक दाना साहिब तुठै पावा । सासि सासि नानक आराधे आठ पहर गुण गावा । (5-749)

अर्थः- हे प्रभु ! मैं अपने दोनों हाथ जोड़ कर तुझसे ये दान माँगता हूँ । हे साहिब ! तेरे प्रसन्न होने से ही मैं ये दान ले सकता हूँ । मेहर कर नानक हरेक सांस के साथ तेरी आराधना करता रहे, मैं आठों पहर तेरी महिमा के गीत गाता रहूँ ।

- हम भीखक भेखारी तेरे तू निज पति है दाता । होहु दैआल नाम देह मंगत जन कउ सदा रहउ रंगि राता ।

अर्थः- हे प्रभु ! हम जीव तेरे दर के भिखारी हैं, तू स्वतंत्र रह के सब को दातें देने वाला है । हे प्रभु ! मेरे पर दयावान हो मुझ भिखारी को अपना नाम दे ता कि मैं सदा तेरे प्रेम - रंग में रंगा रहूँ ।

हंउ बलिहारै जाउ साचे तेरे नाम विटहु । करण कारण सभना का एको अवर न दूजा कोई ।

अर्थः- हे प्रभु ! मैं तेरे सदा कायम रहने वाले नाम से सदके जाता हूँ । तू सारे जगत का मूल है तू ही सब जीवों को पैदा करने वाला है कोई और तेरे जैसा नहीं है ।

बहुते फेर पए किरपन कउ अब किछ किरपा कीजै । होहु दइआल दरसन देहु अपना ऐसी बखस करीजै ।

अर्थः- हे प्रभु ! मुझ माया - ग्रसित को अब तक मरने के अनेक चक्कर लग चुके हैं, अब तो मेरे पर कुछ मेहर कर । हे प्रभु ! मेरे पर दया कर । मेरे पर यही कृपा कर कि मुझे अपना दीदार दे ।

भनति नानक भरम पट खूल्हे गुर परसादी जानिआ । साची लिव लागी है भीतरि सतिगुर सिउ मन मानिआ ।

(3-666)

अर्थः- हे भाई ! नानक कहता है गुरु की कृपा से जिस मनुष्य के भ्रम के पर्दे खुल जाते हैं, उसकी परमात्मा के साथ गहरी सांझ बन जाती है । उसके हृदय में परमात्मा के साथ सदा कायम रहने वाली लगन लग जाती है, गुरु के साथ उसका मन पतीज जाता है ।

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नहीं हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"